<u>कॉलेज/विभाग का नाम:-</u> मधेपुरा कॉलेज मधेपुर बीएड विभाग

<u>विषय:-</u> Childhood and Growing Up (बाल्यावस्था एवं उसका विकास)

8. विषय:- भाषा भिन्नता — बहु-सांस्कृतिक कक्षा के लिए निहितार्थ

भारत बहु-संस्कृति वाला देश है। कक्षाओं में विभिन्न संस्कृति पृष्ठभूमि से आए विद्यार्थी एक साथ अध्ययन करते हैं, शैक्षिक और पाठ्य-सहगामी क्रियाओं में भाग लेते हैं, सामाजिक अनुक्रिया करते हैं। प्रत्येक बालक अपनी भाषा के माध्यम से अपनी इच्छाओं, संवेगों, भावनाओं एवं आवश्यकताओं को व्यक्त करता है। भाषा संचार का एक सशक्त माध्यम है, विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आए बालक अपनी सीखी हुई भाषा के द्वारा ही परस्पर संपर्क में आते हैं, सामाजिक संबंधों का निर्माण करते हैं। बालक जैसी भाषा सीखता है, उसी के साथ उसके व्यक्तित्व का विकास होता है। भिन्न-भिन्न सांस्कृतिक परिवेश से आए बालकों की भाषा में बोलने के तरीके, उच्चारण, शब्दों के चयन, शब्दों के प्रयोग आदि में स्पष्ट अंतर होता है, जैसे- ग्रामीण बनाम शहरी, धर्म बनाम धर्म, जाति बनाम जाति, उच्च सामाजिक स्थिति बनाम निम्न सामाजिक स्थिति, अच्छी आर्थिक स्थिति बनाम निम्न आर्थिक स्थिति, शिक्षित माता पिता बनाम अशिक्षित माता-पिता आदि। शिक्षा प्रक्रिया में विभिन्न बहु-सांस्कृतिक कक्षाएं एक चुनौती है, अतः निम्न बातों का ध्यान रखना आवश्यक है –

- भाषा विकार युक्त बालकों को भाषा विकास हेतु प्रेरित किया जाना चाहिए।
- अध्यापक भाषा के आधार पर विद्यार्थियों से भेदभाव ना रखें।
- अध्यापकों का स्वयं की भाषा पर नियंत्रण होना चाहिए। बालक अनुकरण से भाषा सीखते हैं। अध्यापक बालक का आदर्श होता है। वह अपने अध्यापक की भाषा को आत्मसात करता है।
- अध्यापकों को चाहिए कि बालकों को व्यक्तिगत रूप से पहचाने, उनकी भाषा पर ध्यान दें, आवश्यकता अनुसार व्यक्तीक प्रमार्श दे।
- अध्यापक बालकों की भाषागत समस्याओं को समझने और उसका निराकरण करने के लिए प्रयास करें।
- अध्यापक की यह भी प्रयास करें कि बालकों को रचनात्मक प्रवृत्तियों को व्यक्त करने के अवसर मिले। इससे उनका भाषा विकास उत्पन्न होगा।
- अध्यापक भाषा के आधार पर बालकों में आत्म-सम्मान और स्वनुशासन की भावना विकसित करने के लिए उन्हें प्रेरित करें।
- भाषा गत विचारों को सुधारने के लिए पाठ्य-सहगामी क्रियाओं की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। अतः अध्यापक को नियमित रूप से पाठ्य-सहगामी क्रियाओं का आयोजना करना चाहिए।
- भाषा में गिरावट का एक प्रमुख कारण उसका पारिवारिक वातावरण है। अध्यापकों को आवश्यकतानुसार उचित रूप से माता-पिता का भी मार्गदर्शन करना चाहिए।

- टी.वी., साहित्य, पत्र-पत्रिकाओं तथा मनोरंजन के साधनों का बालक की भाषा पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। अध्यापकों को इस बात पर भी निगरानी रखनी चाहिए।

- बालकों के शब्द-ज्ञान को विकसित करना चाहिए। इससे भाषा तथा उच्चारण संबंधी विचलन नियंत्रित हो सकते हैं।

- भाषा विकास के लिए पुरस्कार और दंड का सावधानी से प्रयोग किया जाना चाहिए। अच्छी और सामाजिक रूप से माननीय भाषा बोलने वाले बालक की प्रशंसा की जानी चाहिए। अश्लील व असभ्य भाषा बोलने वाले बालकों को कठोर दण्डों की अपेक्षा सामान्य सुधारात्मक दंड दिए जाने चाहिए।

- अध्यापक समस्या गत भाषा बोलने वाले बालकों को उपेक्षित ना करें, उनकी भाषा को सुधारने के लिए उनके मानसिक स्वास्थ्य को उन्नत करने का प्रयास करना चाहिए।

- बालकों में भाषा चयन की योग्यता का विकास किया जाना चाहिए।